

प्रातः क्लास

पिता श्री

ओमशान्ति

5-11-67.

रिपोर्ट :- धीरज वर मनकां ... ओमशान्ति । सद्यगी बच्चों ने गीत सुना । सुरव के दिन ओकों, सुरव के बादल दृष्ट जावेंगे किसे, सो बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बच्चे अशरीरी बने जाओ। बाप को याद करते रहे। शरीर का भूलने में ही राईम लगता है। भारी का वर नहीं है। शरीर को भूलते जाओ, अपन को आत्मा समझते जाओ। हम बाप के बच्चे अशरीरी हैं। जो बाप का डेरेशन है बच्चे अशरीरी बने जाओ। तुम्हारे सब दुरव दूर हो जावेंगे। सतो प्रधान हो जावेंगे। कर्मातीत अवस्था हो जावेंगी। यह महान का बाप है। जो समझाते हैं वह भी ऐसे अशरीरी बने का पुरुषार्थ करते हैंगे ना। उनके भी वारी से पर वर जाना है। तो जरूर यह अभ्यास करता होगा। फिर कोई ओकर कहेगा बाबा गुडमोर्निंग तो इनके नीचे उतर गुडमोर्निंग करना पड़ेगा। आवाज में आना पड़ेगा। यह तो पुरुषार्थ करते रहते हैं वारी से पर होना का। क्योंकि इस से ही पाप कट जावेंगे। पाप कहेते-कहेते आत्मा पावज बन जावेंगी। इनके भी अभ्यास करना है ना। बाप श्री मत देते हैं बच्चों। तो यह भी उसमें आ जाता है। इनके (बाबा) भी बाप कहेते हैं अशरीरी ओप हो फिर अशरीरी हो जाता है, अशरीरी बने से ही पाप कटेंगे। इनको ही याद की यात्रा अन्यथा योग जोगन कहा जाता है। मुख्य है यह। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करते रहे। सतो प्रधान बने लिये पुरुषार्थ तो करना पड़ेगा। जब सतो प्रधान बनेंगे तो अशरीरी बन जावेंगे। वारी से पर रहने का पुरुषार्थ करते रहेंगे। इनके भी अभ्यास अभ्यास करना है। यह समझते हैं जैसे अशरीरी हो बाप को याद करेंगे, मुझे देख वचने भी ऐसे करे लगे पड़ेंगे। बाप समझते रहते हैं तुम्हारा कल्याण। इस एक बात में ही होगा है। सुबह को सुबेरे 3-4 बजे उठो, उठ कर, स्नान आद कर यही रणपाल रखना चाहिए हम अशरीरी हो बैठें, और हम आत्मा अपन बाप को याद करते रहे। हम आत्मा अशरीरी हैं। बाप को याद करने से विकर्म विनाश होगे। कर्मातीत अवस्था होगी। फिर दुरव के वापस दृष्टे जावेंगे। बाप जो कहेते हैं वह करना चाहिए। मैं आत्मा हूँ, शिव बाबा का जन्मा हूँ। वास्तव में मैं अशरीरी हूँ। फिर यहाँ पर बने लिये यह शरीर लिया है। जस पर किचा। अब इनके बापस जाना है। अपन को अशरीरी समझते आवाज से पड़े जाना है। अगर फिरके गुडमोर्निंग करना पड़े तो गोचा आवाज से उतरना पड़े। नहीं तो शरीर में बैठना पड़े। बाबा अपन को आत्मा समझ बाप को याद में बैठते रहते हैं। हम भी अशरीरी हो बाप को याद में बैठ जावें। फिर सत्य में राईम पर आना है। यहाँ भी देहागिमान हो अपन को आत्मा समझ बैठना है। बाबा समझते बच्चे अच्छा हैं। सिद्ध करना नहीं है कन्यगी को फिर करना भी है। बाप कहेते हैं बच्चे फिर भूल गीत हैं। गाना तो बहुत ओवेंगे। मन को बाहर के तमोजों से दृष्टे अपन को आत्मा समझते। आत्मा समझने से खुद कहीं गटकेगी नहीं। याद में ही महान है। महान वाली है, सिद्ध करने की बात नहीं। कोई से दिल लगई, फिमल को देख, किगल आई गई, यह कोई अशरीरी पना नहीं। अशरीरी पना में कब कोई को याद नहीं रहेगी। देहागिमान से में आज से ही आरंभ करवा देते हैं। फिर याद आते रहेगी। कर्मातीत बड़ी ऊंची है। यह बाबा समझते भी हैं और अभ्यास भी करते रहते हैं। शिव बाबा का तो अभ्यास नहीं करना है, इस बाप को करना है। पहिले 2 तो अपन को आत्मा समझना है। बाबा ने कहा है हम अशरीरी हो। शरीर का भाज तोड़ना है। बाबा स्वयं करते हैं तो बच्चों को भी सिखावेंगे, ऐसे करा। ऐसे बैठे। वक्त जाओ तो फिर लोटे जाओ। अशरीरी समझ बाप को याद करते रहे। पुरुषार्थ करो। तुम लिये पुरुषार्थ करते नहीं हो। सिद्ध कन्यगी है, करनी नहीं। बाबा समझते हैं कन्यगी में बहुत ओते हैं कन्यगी और करनी रख जैसे होनी चाहिए। अभ्यास पड़ जाओ से तुम बड़ी अशरीरी हो जावेंगे। यह सब पड़ने में राईम लगता है। बड़ी 2 समझते में आत्मा हूँ। बाकि बाप को याद में ही विद्यु पड़ती है। बड़ी 2 याद दूर जावेंगे।

आज बाबा स्वयं इस बारे में दखे रहे हैं। कर्मातीत अवस्था तो पिछड़ी में ही होगी जिसका बहुत पुरस्कार होगा वही कर्मातीत अवस्था को पोषे सकेंगे। बहुत मेहनत करने से पिछड़ी में कर्मातीत अवस्था घनी है। घड़ी 2 घट्टे इस पास करते रहे। कर्मातीत अवस्था होगी तब ऊंचे पद पोषेंगे। सिद्ध कहेंगे से नहीं। इसमें कोई आसन लगाने फट्टे या आद करेज की भी दरकार नहीं। हम आत्मा अशरीरी हैं। पिछे इस शरीर में प्रवेश किया है। अब वापस जाना है। अभी हमको दूसरे शरीर प्रवेश नहीं करना है। घर को ही याद करना पड़े। बाबा समझते तो हैं परन्तु यहाँ से बाहर निकलते ही फिर मूल जाते हैं। वाप जो कहते हैं वह करते नहीं हैं। देहात्मनः 2 में आज से कम ईच्छया बहुत देरती देती रहेगी। सक्कड में कुछ न कुछ विकर्म कर लेते हैं। जैसे सक्कड में जीवन मुक्ति, वैसे माया सक्कड में गहर में डाल देगी। इसलिए बाबा कहते हैं बहुत ऊंचे मंजिल है। अपन को बाहर की रव्यालात से दृष्टोप वाप को याद करना है। फिर गुडमार्निंग करने भी आवाज नहीं निकलेगा। लाचरी आवाज में उगेज फिर वह जीवेंगे। रिसपाप करने नीचे आना पड़ता है। ऐसे अगर बच्चे कमयास करेंगे तो कुछ कष्टयारा होता जावेगा। कर्म ईच्छया वस होवे जावेगा। इसको ही कर्मातीत अवस्था कहा जाता है। बाकि शरीर निर्वाह लिए कर्म तो करना पड़ता है। अगर बच्चों को ऐसा बहुत है, कमाई करने की दरकार नहीं तो और ही सौभाग्यशाली पदम भाग्यशाली कहेंगे। एक जन्म लिए धन काफी है। अब तो हम कर्मातीत अवस्था में बैठ जावे। इस अवस्था में बैठे 2 शरीर छूट जाय फिर अन्त में सा एव जेत हो के जावेगे। वाप को याद करते 2 घर चले जावेगे। अब तो घर जाना है ना। शरीर नहीं लेना है। ऐसे 2 कमयास करते रहेंगे तो फायदा बहुत होगा और दुःख 2 दूर हो जावेगे। वाप अचि हो है धारज देते। तुमको अशरीरीयना शिरवताने। अपन को आत्मा समझ वाप को याद करने से कर्म ईच्छया पर विजय पावेगे। और कोई उपाय नहीं। बाकि सिद्ध कचनी होगी करेंगे कुछ नहीं तो इतना पुपर नहीं होंगे। माला का दाना भी नहीं बज सकेंगे। पुरुषार्थ कर विजय माला में धिरोना है। बच्चों को दिल से लगता है बाबा तो ठीक कहते हैं। और वह पुराना परिदृश। बाकि कोई से आंख लगाना, वापस कोप देखना यह सब व्यर्थ राईम गंवाजा है। वाप कहते हैं अगरही नज उगेज याद करा। अगर वाप का प्रमान नहीं मानते तो गोपा नास्तिक, ठेहर। वाप रोज बच्चों को समझते तो रहते हैं आज थोड़ा जोर से समझते हैं। पुरुषार्थ बहुत करना है। ऊंचे मंजिल समझ इसना नो है। पारिनिवारा जाना भी जरूर है। इस समय सभी को वाजपस्थ अवस्था है। कर्मातीत अवस्था में जाना जरूर है। नहीं तो पद बहुत काम हो जावेगा। बहुत बच्चे हैं जो जरा भी याद नहीं करते। यचात शरीर अपनको आत्मा समझ वाप को याद करना है। शरीर का भाज भिरेता गोप। इसमें ही मेहनत है, इतना सहज थोड़े ही इवापसिरताम वेनेगे। जर से नारायणा वनेज लिए कर्मातीत अवस्था चाहिए। और कुछ भी याद न पड़े। सप का, भूमरी का दृष्टावत अभी का है। वाप ने समझया है वह सज्यामा आद फिर कापी करते हैं। वह कोई बाधराता नहीं। बाधराता- ब्रौलीरायां तुम हो। तुमको लिए। दृष्टावत है। सन्यासियों को वास्तव में कापी नहीं करना चाहिए। कापी करेज वालों को सजा मिलता है। कछुए का मिशाल भी वह नहीं दे सकते। तुमको शरीर निर्वाह अर्थ कर्म कर फिर याद की यात्रा में अर्धगर्व हो बैठना है। यह पुरानी रवत तो छोड़नी है। अब अशरीरी बनना है। हम आत्मा अशरीरी थी। फिर हमने ही 8 प जन्म लिये हैं। चक को भी याद आ जाती है। वाप को भी याद करते हैं। यह है राज और यात्रा। याद का याद वह जाना चाहिए। लाचरी रखनी है कितना समय हम याद में रहे। कर्म चार्थ देख लज्जा आवेगी। भाके भी हमना खबर करते हैं। कहते हैं ना राम राम प्रभात गौर मंत्र। आत्मा को कहते हैं अब रामको स्मरणना है। अर्थात् याद करना है। इससे ही विकर्म विनाश होंगे। अब बच्चे जाते हैं बाबा पास गुडमार्निंग करेज। ना तो नहीं करेंगे। अच्छा माल अचि। परन्तु समझते हैं बाबा याद में बैठे हैं। उनको नीचे चारों में आना पड़ेगा। फिर आत्मा समझ बैठ जाना पड़ेगा। गुडमार्निंग

करके जोय। वास्तव गुडमार्निंग भी क्या करता है। क्यों नहीं आत्मा समझ बैठ जोय। वरचे भी याद में बैठ जायेंगे। तो और ही मदद होंगी। फिर कलारस में भी आना है। बाप भी बरचों को श्री मते देते हैं। अच्छे बनेज लिए। तमो प्रधान से सतो प्रधान बनना है। सतो प्रधान फिर आत्मा को, तमो प्रधान पतित आत्मा को कहा जाता है। यहाँ मनुष्य को धन आद बहुत है। तो अपन को स्वर्ग में सगणोत है। परन्तु है नई वाही। यहाँ कोई अपन को स्वर्ग वासी कह न सके। कभीपुत्र में फिर स्वर्ग को से आया। मनुष्य समझे है कलिधुजा में अजन 40 वर्ष हजार वर्ष पेड़ है। बिलकुल ही अजन अंधकार कृष्ण करारा के जोद में सोचे पेड़ है। अब अमोर को आज लोगी तब जागेंगे। परन्तु डूलेट। यह भी होना है। देरी से जागेंगे और विनाश को फोय लेंगे। यह तुमको ज्ञान रत्न मिलती है। जिस से तुम्हारा शरीरों लिए माडारा भर जाता है। उन्को आत्मा उदीन का, काहूज को स्वनाजा कहा जाता। तुम जागेत हो अभी हम स्वर्ग को वादशाही ले रहे हैं। परन्तु सिद्ध कहें तो नहीं मिल जावेंगी। मेहनत करनी पेड़। यहाँ स्वकार का बहुत अच्छा रचना है। ऐसे अभ्यास कब कार में कर नहीं सकेंगे। दिन का अभ्यास यहाँ तुम बहुत कर सकते हो। यहाँ तुम राईम बहुत मत करो। राईम को सामल करना सौरवा। बाकि किंगजल आई ररवजा, बापल को प डाद देरवजा यह तो नीचे इंगरेम को निशानी है। यह ही काला तो हो न सके। तुम मेहनत नहीं करते हो। अपन को आत्मा समझ बैठे। आत्मा है ही बाप का बरचा। ज्ञान वात अपन को आत्मा समझ अंतराही हो बैठ जाते। में देह नहीं आत्मा है। पहले आत्मा को पका निश्चय करो। नहीं का तो आरेव धारका देते रहेगी। अन्तरवत को फोय नहीं सकेंगे। कदा भी रहे यह अभ्यास कर सकते हो। ऐसे नहीं यहाँ रहने से अभ्यास होगा। यहाँ सात रोज में यही सिरवजा है। उबाप अभी भी सिरवोय रहे हैं। पूं तो रोज समझोत रहते हैं। फिर आज जोर से सगणोत है। वरचे अपन पर रहम करो। तुम पीवन ले तो शरीर भी थी। सुरव भी था। तुम सेरे (L.N.) को फिर बनजा है। बाबा पुत्रिया बतलोत है वट करना पेड़। तुम अजागिल जैसे पापात्मा हो। सब अजागिल है। 84 जन्म लिए हैं तो अजागिल ठहरे जा। यह बुद्धों जन्मों के भी अन्त का जन्म ही भाई भी पूरी को ही पाप भी फेर लिये हैं। ऐसे नहीं भाई करेन से पाप करते हैं। कुछ भी नहीं। यह अभ्यास तो बाप को सिरवोय कोई नहीं सिरवोत। भाई करेन उतरेत ही ओय है। स्वकयम ओय पट पेड़ है। जितने माई को वट ही अजागिल ठहरे। अजागिल कोई दुरिरो नहीं होते। प्रम सब से गारती अजागिल हो। कबूर भी स्वोय वट तुम को। सैना भी तुम्हारी ला है। तो बाप समझोत वरचे जपकलत मत करो। मुफ्त अपनो नाम नरवाद करेगे। बाबा वरीरंग देते हैं किंगजल आई न ररवजा है। आरेव बहुत धारववाज है। तब तो ररकम जागिमाल देते हैं। ऐसे कोई ने किया नहीं है। यह एक कच्चा बना दो है। नाम कोर-ओर। बाकि रते कोन बैठ अपनी आरेवीज को लेंगे। यह सब जोपोड है भाई जांग के। रामा भगा, भावद आद यह भी आ भाई मांग के शरय है सबी करेन के है। एक गीता है है जितने तुम उपर चढ़ते हो। परन्तु इनको भी स्वयंज कर दिया है। कदा शिव वावा जो पातेह पावन है कदा श्री R जो पूरे 84 जन्म लेने वाला मनुष्य है। किरी वडी रूप है। 84 जन्मों वाला ही पतित अजागिल को होंगे। बाबा वरचों को समझोत रहते हैं अन्तरी वनो। यहाँ तो सब नहीं ओय बैठेंगे। फिर तो बहुत अभ्यास बनाया पेड़। तुम वरचे आकर रहेत इन लिए यह हाल आद वनोज पेड़ते हैं। बुद्धों में चलता है यह बनना है। फिर भी याद के यादों में जरूर रहना है। रात को अभ्यास बढ़ाओ। अमर बेला 2 वजे को कहा जाता है। गुरु लोग रात को 2 वजे उठते हैं। अब तो बाप कहते हैं भाईक-याद करो तो निरकम विनाश हो जाये। अपन को आत्मा समझो। इतना ऊँच पद पोज लिए मेहनत करो। पहले 2-3 अभ्यास करो हम आत्मा अन्तरी है। अपन को आत्मा निश्चय करेन। तो बाप ओप ही याद उनोवंगा। याद के यादों से ही बेरा पाव होना है। तुम उन तरफ लेंते जायेंगे। पदोप विनाश याद में भाई कर राज्य करेगे। पहले राजाई का शासिक वजेन अन्तरी ही शोम का अभ्यास करो। बाबा आज वरचों को साधना देते हैं। वरचे मेहनत करते जायें हैं। इतनीपर तरत पड़ता है। उंच पद को पाये लियेगा। अरका 33।